Raga of the Month November 2021   Raganga Raga Asavari

रागांग राग आसावरी

प्रचारमे आसावरी राग २ प्रकारोंसे गाया जाता है। एक शुद्ध रिषभकी और दूसरी कोमल रिषभकी । कोमल रिषभकी आसावरी यह ध्रुपदियोंकी आसावरी मानी जाती है। उसमे गंधार, धैवत और निषाद कोमल होते है और रिषभभी कोमल होता है। इसके कारन कोमल रिषभकी आसावरी को तोड़ी का प्रकार समझके उसे आसावरीतोड़ी इस नामसे भी जाना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि जब ख्याल गायन प्रचारमे आया तब ख्याल गायक तान क्रियाकी सुविधा के लिए कोमल रिषभ के बदलेमे शुद्ध रिषभ का प्रयोग करने लगे। और शुद्ध रिषभकी आसावरीको आसावरी थाटके आश्रय रागका स्थान प्राप्त हुआ। कोमल और शुद्ध रिषभकी आसावरी में रिषभका भेद छोड़के पूर्ण रूपमे समानता पायी जाती है।

शुद्ध रिषभकी आसावरीका स्वरुप हम इस प्रकार समझ सकते है।

वादी धैवत संवादी गंधार , आरोहमे गंधार और निषाद वर्ज्य , अवरोह सम्पूर्ण, गायन समय दिनका दूसरा प्रहर , सा, प, ध पर पूर्ण न्यास, ग पर अर्ध न्यास, प्रकृति गंभीर.

आरोह सा रे म प ध, सा **;** **अवरोह** सां नि ध, प, म ग रे सा

सा , ऩि ध़ प़, म़ प़ [नि]ध़ ध़ सा ; **[म]रे म प ध म प [म]ग ऽ [सा]रे सा** ; सा [म]रे म प , म प ध,
प ध म प ध ध सां, सां नि ध प , **म प ध ध सां** , ध गं रें सां, **[सा]रें नि ध प,** म प ध म प गऽरे सा

आसावरी थाट में दिनके दूसरे प्रहर में गाये जानेवाले प्रमुख राग हैं - आसावरी , जौनपुरी, गांधारी, देवगांधार , खट , देसी और सिंध भैरवी। रात्रिके तीसरे प्रहर में गाये जानेवाले प्रमुख राग हैं -दरबारी, अड़ाना और मालकौंस अंगका कौसी कानड़ा।

आजके ऑडियो में हम पहले पंडित रामाश्रेय झा जीसे आसावरी थाट के रागोंकी विशेषताएँ संक्षेपमे सुनेंगे, फिर पंडित के जी गिंडे जीने लेक्चर डेमो में प्रस्तुत राग आसावरी का विवरण और उसके पश्चात उन्हींने गायी हुई आचार्य रातंजनकरजीने रची हुई बंदिश सुनेंगे।

आभार- "रागांग राग विवेचन "- पंडित यशवंत महाले , अभिनव गीतांजलि (भाग ५) - पंडित रामाश्रेय झा , श्री राजन पर्रीकर, श्री अजय गिंडे,

०१ -११- २०२१

Link to the list of 120+ Raga of the month articles

@ Archive of ROTM Articles - http://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx